विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

राष्ट्रीय कार्यशाला

भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शब्दावली में परिवर्तन :

27– 28 जून 2024

कार्यशाला की प्रस्तावना एवं शोध पत्र आमन्त्रण का विवरण

आयोजक

हिंदी अध्ययनशाला

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
456010

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 27- 28 जून 2024 को उज्जैन में किया जा रहा है। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन और भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में शब्दावली के विकास और परिवर्तन पर विमर्श होगा। इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुति एवं सहभागिता के लिए विशेषज्ञ विद्वान, प्राध्यापक एवं लेखक आमंत्रित किए जा रहे हैं।

भारतीय समाज और संस्कृति में ज्ञान - विज्ञान का अक्षय भंडार है, जहाँ सहस्राब्दियों से ज्ञान - विज्ञान को हस्तगत और हस्तांतरित करने की निरंतरता रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान- विज्ञान की प्रतीक है, जहाँ शिक्षण और अधिगम, लोक और परलोक, कर्म और धर्म का अद्भुत समन्वय है।

परंपरागत संस्कृत ज्ञान प्रणालियों का कोष सुविशाल है। इसके विकास में विभिन्न मतावलंबियों के साथ-साथ विविध व्यवसायों से जुड़े लोगों और जीवन के सभी क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के समुदायों का हजारों वर्षों का योगदान रहा है। इसी प्रकार संस्कृत पुरातन ज्ञान के साथ-साथ समकालीन रूप से भी प्रासंगिक है। पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का उपयोग और युग परिवेश के अनुरूप अद्यतनीकरण करने में उसकी समृद्ध शब्दावली और भाषिक विशेषताएं अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सुदूर अतीत से चली आ रही ज्ञान की आवयविक अखण्डता के अनुरूप अंतरानुशासनिक अध्ययन और अनुसंधान पर बल देती है। बहुविषयक शिक्षा से व्यक्ति का दृष्टिकोण व्यापक होता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) नवाचारों को प्रोत्साहित करने के अवसर जुटा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सार्थक क्रियान्वयन के लिए जरूरी है कि पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश हो। यह नीति भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देती है और शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रमों को एकीकृत करते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रवाह में इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास करती है। इसी दृष्टि से यह अपेक्षा की जाती है कि देश में शीघ्र ही अनुवाद एवं विवेचना से संबंधित अपने प्रयासों का विस्तार किया जाए, जिससे सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली अधिगम सामग्री और अन्य महत्त्वपूर्ण लिखित एवं मौखिक सामग्री उपलब्ध हो सके।

शब्दों का महत्व अत्यंत गहरा है। शब्द हमारे विचारों, भावनाओं और ज्ञान को व्यक्त करने का माध्यम हैं। वे संवाद की

कुंजी हैं और समाज में पारस्परिक संबंधों को मजबूत करते हैं। शब्दों के माध्यम से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाते हैं। महान वैयाकरण भर्तृहरि ने शब्द ब्रह्म पर गहन मंथन किया है। हर विषय के विकास के लिए चाहे वह विज्ञान हो या किसी अन्य शाखा से सम्बद्ध हो, उसके अनुकूल पारिभाषिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के विकास की आवश्यकता होती है। ज्ञान के सभी क्षेत्रों में हर शब्द का निश्चित, स्थिर अर्थ होता है। शब्द की परिभाषा ही अर्थ को पूर्णतः स्पष्ट करती है। हर विषय के विकास के लिए चाहे वह विज्ञान हो या किसी अन्य शाखा से सम्बद्ध हो, उसके अनुकूल शब्दावली के विकास की आवश्यकता होती है। शब्द की परिभाषा ही अर्थ को पूर्णतः स्पष्ट करती है। मौलिक लेखन, शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुवाद में शब्दावली की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण भूमिका होती है। ज्ञान - विज्ञान के प्रसार के लिए ऐसी शब्दावली की आवश्यकता होती है जिसमें सूचना, विचार और भावों को उजागर करने की पूर्ण क्षमता हो, हर प्रकार की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता हो। उपयुक्त शब्दावली के अभाव में अध्ययन, अध्यापन, शोधकार्य, ग्रंथ निर्माण आदि कुछ भी संभव नहीं है, वहीं भारतीय जड़ों पर आधारित और हमारी अस्मिता को प्रतिबिंबित करने वाली शब्दावली का विकास और यथावश्यक परिवर्तन भी आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में शब्दावली का निर्माण, विकास एवं परिवर्तन एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसके बिना ज्ञान, विज्ञान और प्रज्ञा की निरंतरता सम्भव नहीं है।

इस कार्यशाला में सभी अध्ययन क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में शब्दावली के विकास, परिवर्तन और प्रसार पर गहन मंथन एवं क्रियान्वयन पर चर्चा की जाएगी।

राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के लिए प्रमुख विचारणीय बिंदु

- भारतीय ज्ञान परंपरा में शब्द की अवधारणा, शब्दार्थ सम्बन्ध एवं स्वरूप
- शब्दार्थ की अवधारणा और अर्थ बोध के साधन : भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शब्दकोश की अवधारणा एवं स्वरूप
- भारत में शब्दकोश की परंपरा और प्रमुख आयाम
- भारतीय परंपरा में शब्दावली के प्रकार : भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

- भारतीय ज्ञान परंपरा में शब्द एवं शब्दकोश का महत्व एवं संभावनाएं
- शब्दावली निर्माण का स्वरूप, सिद्धांत एवं भाषिक युक्तियाँ : भारतीय ज्ञान परंपरा का परिप्रेक्ष्य
- शब्दावली निर्माण में व्याकरण और भाषिक युक्तियों का प्रयोगः भारतीय ज्ञान परम्परा और नवाचार
- विभिन्न विषय क्षेत्रों की शब्दावली : भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में विकास और परिवर्तन
- भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में पारिभाषिक शब्दावली
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का स्वरूप और भारतीय ज्ञान प्रणाली
- भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्य सामग्री एवं पुस्तकों के लेखन में शब्दावली के विकास एवं परिवर्तन की आवश्यकता
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के सन्दर्भ में विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों और अनुसंधान में शब्दावली के विकास एवं परिवर्तन की आवश्यकता
- भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में विविध अध्ययन क्षेत्रों, यथा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, दर्शनशास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्राणिशास्त्र, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित, भौतिक विज्ञान, संस्कृत, अंग्रेजी साहित्य, हिंदी साहित्य, संगीत, गृह विज्ञान, पाकशास्त्र, मनोविज्ञान,चिकित्साविज्ञान, कृषि, विधि, अभियांत्रिकी और प्रबंधन, आधार पाठ्यक्रम के अंतर्गत समग्र व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण आदि में शब्दावली का विकास, परिवर्तन एवं प्रसार की आवश्यकता (उपर्युक्त के अतिरिक्त भी अपने विषय क्षेत्र के अनुरूप शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं)

इसी प्रकार शोधपत्र लेखन एवं विमर्श के लिए कार्यशाला के केंद्रीय विषय से सम्बद्ध अन्य विषय भी हो।

विशेषज्ञ विद्वानों, विभिन्न विषय के अध्ययन बोर्ड के चेयरमैन, सदस्यों, फेसिलीलेटर, अकादमी के लेखकों, कंटेंट क्रियेटर प्राध्यापकों एवं उच्च शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों से संलग्न गूगल फार्म (गूगल फार्म लिंक

https://forms-gle/zVbwYJA32cUBG6Ad6)

के माध्यम से अपनी सहमति, विवरण एवं शोध पत्र के शीर्षक के लिए निवेदन है।

विषय क्षेत्र से सम्बद्ध शोध पत्र ईमेल-

shabdavalivikramuniv@gmail.com

पर अंतिम तिथि 25 जून 2024 तक प्रेषित करने का कष्ट करें।

शोध पत्र की शब्द सीमा 2500 से 4000 शब्द तथा आलेख प्रेषित करने की अंतिम तिथि 25 जून 2024 निर्धारित की गई है। कार्यशाला एवं संगोष्ठी के लिए प्राप्त स्तरीय शोध पत्रों को प्रकाशित किया जाएगा।

कार्यशाला की रूपरेखा

प्रथम दिवस दिनांक 27-06-2024

कार्यक्रम विवरण

पंजीयन	:	प्रातः 9:30 से 10:30
उद्घाटन सत्र	:	प्रातः 10:30 से 11:30
अल्पाहार	:	प्रातः 11:30 से 12:.00
विषय विशेषज्ञ के बीज वक्तव्य	:	मध्याह्न 12:00 से 1:30
भोजनावकाश	:	1:30 से 2:30
आलेख/शोध पत्र प्रस्तुतीकरण	:	दोपहर 2:30 से 4:30
कार्यशाला/संगोष्ठी समाहार सत्र/ प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण	:	4:30 से 5:00
आभार	:	5:00

द्वितीय दिवस दिनांक 28-06-2024

कार्यक्रम विवरण

शब्दावली का विकास एवं परिवर्तन और स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित भारतीय ज्ञान परंपरा पर विमर्श	:	प्रातः 10.30 से 12.00
अल्पाहार	:	मध्याह्न 12:00 से 12:30
शब्दावली का विकास एवं परिवर्तन और स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने वाले भारतीय ज्ञान परंपरा से सम्बंधित नवीन सुझाव पर विमर्श	:	12.30 से 2.00
भोजनावकाश	:	दोपहर 2.00 से 3.00

पाठ्यक्रम के स्वरूप और
शिक्षण पद्धति : पाठ्यसामग्री
पर चर्चा : दोपहर 3:00 से 4:00

कार्यशाला / संगोष्ठी

समाहार सत्र : 4:00 से 4:30 तक

आभार : 4.30

कार्यक्रम स्थल -

स्वर्ण जयंती सभागार

मुख्य प्रशासनिक भवन परिसर
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

संरक्षक -

प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय

कुलगुरु
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

मार्गदर्शन -

डॉ. अनिल कुमार शर्मा

कुलसचिव
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

मुख्य समन्वयक -

प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा

नोडल अधिकारी
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कुलानुशासक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश) 456010
व्हाट्सएप 98260 47765

समन्वयक -

प्रो. सत्येंद्र किशोर मिश्रा
मो. 9926381351

प्रो. जगदीश चंद्र शर्मा
मो. 8319809715

प्रो. डी. डी. बेदिया
मो. 9425534750

प्रो. संदीप तिवारी
मो. 9399606200